



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 05, अंक: 06 (नवम्बर-दिसम्बर, 2025)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

पशुधन का मानसून प्रबंधन

*यशेश सिंह, शालू सिंह एवं मो. फैज

सरदार वल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, मेरठ-250110

*संवादी लेखक का ईमेल पता: yasheshsingh2011@gmail.com

मानसून में पशुधन प्रबंधन एक महत्वपूर्ण पहलू है जो पशुपालकों के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकता है। उचित देखभाल और प्रबंधन के माध्यम से, पशुओं को स्वस्थ और उत्पादक बनाए रखा जा सकता है। पशु आवास प्रबंधन में पशुओं के लिए सूखा और साफ स्थान सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है। इसके लिए ऊँची भूमि का चुनाव, पक्के फर्श का उपयोग, उचित बिछावन सामग्री, और अच्छी जल निकासी व्यवस्था आवश्यक है। छत की मरम्मत और पर्याप्त वेंटिलेशन भी महत्वपूर्ण हैं। भोजन और पानी के प्रबंधन में पशुओं को पौष्टिक आहार और साफ पानी प्रदान करना शामिल है। सूखे चारे का सही चुनाव, पौष्टिक चारे की उपलब्धता, और स्वच्छ पानी की आपूर्ति सुनिश्चित करनी चाहिए। रोग निवारण और नियंत्रण में टीकाकरण, कृमिनाशक, और मक्खी-मच्छर नियंत्रण शामिल हैं। पशुओं को बीमारियों से बचाने के लिए नियमित टीकाकरण और कृमिनाशक दवाएं देनी चाहिए। मक्खियों और मच्छरों को नियंत्रित करने के लिए उचित उपाय करने चाहिए। स्वच्छता और सफाई में पशु आवास और पशुओं की सफाई शामिल है। नियमित रूप से गोबर और मूत्र को हटाना चाहिए, फर्श को साफ रखना चाहिए, और पशुओं को नहलाना चाहिए। अन्य महत्वपूर्ण बातों में पशुओं को तनाव से बचाना, उन्हें पहचानना, पशु चिकित्सक से संपर्क रखना, और रिकॉर्ड रखना शामिल है। मानसून में पशुधन प्रबंधन के लिए "5S" सिद्धांत - स्थान, सूखा चारा, स्वच्छ पानी, स्वच्छता, और सतर्कता - का पालन करना महत्वपूर्ण है। इन सिद्धांतों का पालन करके, पशुपालक अपने पशुओं को स्वस्थ और उत्पादक रख सकते हैं और मानसून में पशुपालन को सफल बना सकते हैं।

पशु आवास का प्रबंधन

• सूखा और साफ स्थान :

- ✓ भूमि का चुनाव: पशु आवास के लिए हमेशा ऊँची भूमि का चुनाव करें। निचले इलाकों में पानी जमा होने का खतरा होता है, जिससे कीचड़ और बीमारियाँ फैल सकती हैं। यदि आपके पास निचली भूमि है, तो नींव को ऊँचा उठाकर आवास बनाएं।
- ✓ फर्श का प्रकार: पक्के फर्श (सीमेंट या ईंट) कच्चे फर्श की तुलना में बेहतर होते हैं क्योंकि वे आसानी से साफ हो जाते हैं और नमी को कम करते हैं। पक्के फर्श को थोड़ा ढलान वाला बनाएं ताकि मूत्र और पानी आसानी से बह जाए। यदि कच्चा फर्श है, तो उसे नियमित रूप से सूखा रखें और हर दिन ताज़ी सूखी मिट्टी या रेत बिछाएं।
- ✓ बिछावन सामग्री : पशुओं के आराम के लिए बिछावन सामग्री का उपयोग करें। यह नमी को सोखती है और पशुओं को ठंड से बचाती है। धान का भूसा, गेहूँ का भूसा, लकड़ी का बुरादा, या सूखी पत्तियाँ बिछावन सामग्री के रूप में इस्तेमाल की जा सकती हैं। बिछावन सामग्री को नियमित रूप से बदलें जब वह गीली या गंदी हो जाए।
- ✓ जल निकासी प्रणाली: आवास के आसपास उचित जल निकासी प्रणाली बनाएं। नालियाँ बनाएं ताकि बारिश का पानी और पशुओं का मूत्र आसानी से बह जाए और आवास में जमा न हो। नालियों को नियमित रूप से साफ करें ताकि वे अवरुद्ध न हों।

- छत की मरम्मत :

- छत की मजबूती: छत मजबूत होनी चाहिए ताकि तेज हवाओं और भारी बारिश को सह सके। कमजोर या टूटी हुई छतें पशुओं को बारिश से बचाने में विफल रहेंगी। छत की नियमित रूप से जांच करें और कमजोर हिस्सों की मरम्मत करें।
- जलरोधक सामग्री: छत जलरोधक सामग्री से बनी होनी चाहिए, जैसे कि एस्बेस्टस शीट, टिन शीट, या टाइलों। सुनिश्चित करें कि छत में कोई छेद या दरार न हो जहाँ से पानी अंदर आ सके। यदि छत फूस की है, तो उसे प्लास्टिक शीट से ढककर जलरोधक बनाएं।
- छत का ढलान: छत में पर्याप्त ढलान होना चाहिए ताकि बारिश का पानी आसानी से बह जाए और छत पर जमा न हो। ढलान कम से कम 25-30 डिग्री होना चाहिए।

- पर्याप्त वेंटिलेशन :

- प्राकृतिक वेंटिलेशन: खिड़कियां और रोशनदान पर्याप्त आकार के होने चाहिए ताकि ताजी हवा आसानी से अंदर आ सके। खिड़कियां और रोशनदानों को आवास के विपरीत दिशाओं में रखें ताकि क्रॉस-वेंटिलेशन हो सके। गर्मियों में वेंटिलेशन को बढ़ाने के लिए खिड़कियों और दरवाजों को खुला रखें, लेकिन बारिश से बचाने के लिए उपाय करें (जैसे कि तिरपाल या प्लास्टिक शीट का उपयोग)।
- कृत्रिम वेंटिलेशन (पंखे): यदि प्राकृतिक वेंटिलेशन पर्याप्त नहीं है, तो कृत्रिम वेंटिलेशन के लिए पंखों का उपयोग करें। पंखों को छत पर या दीवारों पर स्थापित करें ताकि हवा का प्रवाह बना रहे। पंखों को नियमित रूप से साफ करें ताकि वे कुशलता से काम करें।
- धुआं परीक्षण: वेंटिलेशन की जांच करने के लिए धुआं परीक्षण करें। एक धुएं का बम या अगरबत्ती जलाएं और देखें कि धुआं कितनी जल्दी बाहर निकलता है। यदि धुआं धीरे-धीरे बाहर निकलता है, तो वेंटिलेशन में सुधार की आवश्यकता है।

- पशुओं को भीड़ से बचाएं

- स्थान की गणना: प्रत्येक पशु के लिए आवश्यक स्थान की गणना करें। गायों के लिए कम से कम 40-50 वर्ग फीट प्रति गाय, भैंसों के लिए 50-60 वर्ग फीट प्रति भैंस, और छोटे पशुओं के लिए 15-20 वर्ग फीट प्रति पशु की आवश्यकता होती है। यह सुनिश्चित करें कि आपके आवास में पशुओं के लिए पर्याप्त जगह हो।
- समूह बनाना: पशुओं को आयु, आकार और स्वभाव के अनुसार समूहों में विभाजित करें। कमजोर और छोटे पशुओं को मजबूत और बड़े पशुओं से अलग रखें ताकि वे प्रतिस्पर्धा से बच सकें और पर्याप्त भोजन और पानी प्राप्त कर सकें।
- स्थान का विस्तार: यदि पशुओं की संख्या बढ़ जाती है, तो आवास का विस्तार करें या अतिरिक्त आवास बनाएं। भीड़भाड़ से हमेशा बचें।

चारा और पानी का प्रबंधन

- सूखा चारा :

- चारे का चयन: फूफूद लगने के लिए कम संवेदनशील चारे का चयन करें, जैसे कि सूखी घास, जई का भूसा, या मक्का का भूसा। दलहनी चारे में फूफूद लगने का खतरा अधिक होता है, इसलिए उन्हें सावधानी से भंडारित करें।
- सुखाने की विधि: चारे को धूप में अच्छी तरह से सुखाएं। चारे को ढेर में न रखें, बल्कि उसे फैलाकर सुखाएं ताकि हवा का प्रवाह हो सके। चारे को पलटना सुनिश्चित करें ताकि वह समान रूप से सूख जाए। चारे को सुखाने के लिए ऊँचे मंचों या बांस की चटाईयों का उपयोग करें ताकि वह जमीन से ऊपर रहे।
- भंडारण विधि: चारे को सूखे, हवादार और ऊँचे स्थान पर भंडारित करें। चारे को फर्श से ऊपर रखें और दीवारों से दूर रखें ताकि नमी से बचाया जा सके। चारे को भंडारित करने के लिए बोरियों या त्रिपाल का उपयोग करें। चारे के ढेर को नियमित रूप से जांचें और फूफूद लगे चारे को हटा दें।

- पौष्टिक चारा
- ✓ संतुलित राशन: पशुओं के लिए संतुलित राशन तैयार करें जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, वसा, विटामिन और खनिज का सही अनुपात हो। अपने पशु चिकित्सक या पशु पोषण विशेषज्ञ से राशन तैयार करने में मदद लें। विभिन्न प्रकार के चारे को मिलाकर खिलाएं, जैसे कि हरा चारा, सुखा चारा और दाना।
- ✓ साइलेज और हे को पहले से तैयार करके भंडारित करें। हाइड्रोपोनिक चारा घर पर ही उगाया जा सकता है।
- ✓ विटामिन और खनिज पूरक: बरसात में विटामिन और खनिजों की कमी हो सकती है। पशुओं को विटामिन और खनिज पूरक दें। खनिज मिश्रण और विटामिन इंजेक्शन पशु चिकित्सक की सलाह पर दें।
- स्वच्छ पानी :
- ✓ पानी का स्रोत: पशुओं के लिए साफ पानी का स्रोत सुनिश्चित करें। कुएं, नलकूप, या नहर का पानी इस्तेमाल किया जा सकता है। तालाब और नदी के पानी से बचें क्योंकि वे दूषित हो सकते हैं। यदि संभव हो, तो पाइपलाइन के माध्यम से पानी पहुंचाएं ताकि पानी दूषित न हो।
- ✓ पानी को साफ करना: यदि पानी दूषित है, तो उसे उबालकर या फ़िल्टर करके साफ करें। पानी को कीटाणुरहित करने के लिए क्लोरीन की गोलियों का उपयोग किया जा सकता है। पानी को साफ करने के लिए घरेलू जल फ़िल्टर का उपयोग करें।
- ✓ पानी के बर्तन की सफाई: पानी के बर्तनों को नियमित रूप से साफ करें, कम से कम दिन में दो बार। बर्तनों को ब्रश और साबुन से धोएं और उन्हें धूप में सुखाएं। पानी के बर्तनों में जमा कीचड़, काई और गंदगी को हटा दें।
- पानी की उपलब्धता :
- ✓ पर्याप्त मात्रा: सुनिश्चित करें कि पशुओं को हमेशा पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध रहे, खासकर गर्भ और आर्द्ध दिनों में। गायों और भैंसों को प्रतिदिन 30-50 लीटर पानी की आवश्यकता होती है, और छोटे पशुओं को 5-10 लीटर पानी की आवश्यकता होती है। पानी के बर्तनों को हमेशा भरा रखें।
- ✓ पानी तक आसान पहुंच: पानी के बर्तनों को पशुओं के लिए आसानी से सुलभ स्थान पर रखें। सुनिश्चित करें कि कमज़ोर और छोटे पशु भी आसानी से पानी तक पहुंच सकें। पानी के बर्तनों के आसपास कीचड़ न होने दें ताकि पशु आसानी से चल सकें।
- ✓ पानी के बर्तन के प्रकार: पशुओं के लिए उपयुक्त पानी के बर्तनों का उपयोग करें। सीमेंट के बर्तन, प्लास्टिक के बर्तन, या धातु के बर्तन इस्तेमाल किए जा सकते हैं। बर्तन मजबूत और टिकाऊ होने चाहिए और आसानी से साफ किए जा सकें।

रोग निवारण और नियंत्रण

- टीकाकरण :
- ✓ टीकाकरण कार्यक्रम: अपने क्षेत्र के लिए पशु चिकित्सक से टीकाकरण कार्यक्रम के बारे में सलाह लें। खुरपका-मुंहपका रोग (FMD), गलाधोंट (HS), ब्लैक ब्रार्टर (BQ), एन्ट्रेक्स, और ब्रुसेलोसिस जैसी बीमारियों के लिए टीकाकरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। टीकाकरण समय पर और सही तरीके से कराएं।
- ✓ टीकाकरण का रिकॉर्ड: टीकाकरण का रिकॉर्ड रखें। पशुओं को कब टीका लगाया गया था, टीके का बैच नंबर, और अगले टीकाकरण की तारीख रिकॉर्ड करें। रिकॉर्ड रखने से टीकाकरण कार्यक्रम को प्रबंधित करना आसान हो जाता है।
- ✓ टीकाकरण के तरीके: टीकाकरण केवल प्रशिक्षित पशु चिकित्सकों या पशुधन सहायकों द्वारा ही करवाया जाना चाहिए। टीकाकरण सही खुराक और सही मार्ग से किया जाना चाहिए। टीकाकरण के बाद पशुओं की निगरानी करें और किसी भी प्रतिकूल प्रतिक्रिया के मामले में पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- कृमिनाशक :
- ✓ कृमिनाशक दवा का चयन: अपने पशु चिकित्सक से सलाह लेकर उचित कृमिनाशक दवा का चयन करें। विभिन्न प्रकार के कृमिनाशक उपलब्ध हैं, जैसे कि एल्बेंडाजोल, फेनबेंडाजोल, और आइवरमेकिटन। दवा का चयन पशुओं में पाए जाने वाले कृमियों के प्रकार और दवा प्रतिरोध के आधार पर किया जाना चाहिए।

- ✓ कृमिनाशक दवा की खुराक और आवृत्ति: कृमिनाशक दवा की सही खुराक और आवृत्ति का पालन करें। दवा को निर्धारित मात्रा में और निर्धारित समय अंतराल पर दें। ओवरडोजिंग या अंडरडोजिंग से बचें।
- ✓ रोटेशनल कृमिनाशक: कृमि प्रतिरोध को रोकने के लिए रोटेशनल कृमिनाशक रणनीति का उपयोग करें। अलग-अलग रसायनों वाले कृमिनाशकों को बारी-बारी से उपयोग करें। उदाहरण के लिए, आप छह महीने के लिए एल्बेंडाजोल का उपयोग कर सकते हैं और फिर अगले छह महीने के लिए आइवरमेक्टिन का उपयोग कर सकते हैं।
- ✓ मल परीक्षण: नियमित रूप से मल परीक्षण कराएं ताकि कृमि संक्रमण की निगरानी की जा सके। मल में अंडे की गिनती (FEC) करके कृमि संक्रमण की गंभीरता का पता लगाया जा सकता है। मल परीक्षण के परिणामों के आधार पर कृमिनाशक उपचार को समायोजित किया जा सकता है।
- मक्खी और मच्छर नियंत्रण :
 - ✓ कीटनाशक स्प्रे: पशु आवास और आसपास के क्षेत्रों में कीटनाशक स्प्रे का उपयोग करें। पाइरेश्रोइड्स और अँगनोफॉस्फेट्स जैसे कीटनाशक प्रभावी हैं। स्प्रे को पशुओं के शरीर पर और आवास की दीवारों और फर्श पर छिड़कें। स्प्रे करते समय सुरक्षा सावधानियों का पालन करें।
 - ✓ मक्खी जाल: मक्खी जाल का उपयोग मक्खियों को पकड़ने के लिए करें। चिपकने वाले मक्खी जाल और फेरोमोन ट्रैप प्रभावी हैं। मक्खी जाल को पशु आवास के पास और मक्खी प्रजनन स्थलों के पास रखें।
 - ✓ जैव नियंत्रण: मक्खी और मच्छर नियंत्रण के लिए जैव नियंत्रण विधियों का उपयोग करें। परजीवी तत्त्वया और शिकारी कीड़े जैसे जैविक एजेंटों का उपयोग मच्छरों और मक्खियों के लार्वा को खाने के लिए किया जा सकता है।
 - ✓ पर्यावरण प्रबंधन: मक्खी और मच्छर प्रजनन स्थलों को कम करें। जमा पानी को हटा दें, गोबर को नियमित रूप से हटा दें और कंपोस्ट करें, और धास और झाड़ियों को काट दें।
- निगरानी :
 - ✓ दैनिक निगरानी: पशुओं के स्वास्थ्य की दैनिक रूप से निगरानी करें। सुबह और शाम पशुओं का निरीक्षण करें।
 - ✓ रोग के लक्षण पहचानें: बीमारी के शुरुआती लक्षणों को पहचानें, जैसे कि बुखार, खांसी, दस्त, भूख न लगना, सुस्ती, नाक या आंख से स्राव, और त्वचा पर धाव।
 - ✓ तापमान लेना: यदि पशु बीमार दिखता है, तो उसका तापमान लें। सामान्य तापमान पशु प्रजाति के अनुसार भिन्न होता है। गायों और भैंसों का सामान्य तापमान $100.5-102.5$ डिग्री फ़ारेनहाइट होता है।
 - ✓ पशु चिकित्सक से संपर्क: यदि आपको किसी पशु में बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं, तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें। प्रारंभिक निदान और उपचार पशुओं को गंभीर जटिलताओं से बचाने में मदद कर सकता है।
 - ✓ पृथक्करण (Isolation): बीमार पशुओं को स्वस्थ पशुओं से अलग करें ताकि बीमारी फैलने से रोकी जा सके। बीमार पशुओं को अलग आवास में रखें और उनकी विशेष देखभाल करें।
- स्वच्छता और सफाई :
 - ✓ सफाई की आवृत्ति: पशु आवास को दिन में कम से कम दो बार साफ करें। गोबर और मूत्र को दिन में दो बार हटा दें। यदि आवास बहुत गंदा हो जाता है, तो इसे अधिक बार साफ करें।
 - ✓ सफाई की विधि: गोबर और मूत्र को फावड़े और ब्रश से हटा दें। फर्श को पानी और ब्रश से धोएं। फर्श को धोने के लिए कीटाणुनाशक घोल का उपयोग करें।
 - ✓ कीटाणुनाशक का उपयोग: कीटाणुनाशक का उपयोग करके पशु आवास को कीटाणुरहित करें। फिनाइल, लाइसोल, और सोडियम हाइपोक्लोराइट जैसे कीटाणुनाशक प्रभावी हैं। कीटाणुनाशक का उपयोग करते समय निर्माता के निर्देशों का पालन करें।

- पशुओं की सफाई :

- ✓ नियमित स्नान: पशुओं को नियमित रूप से नहलाएं, खासकर बरसात में। नहलाने से उनकी त्वचा साफ रहेगी और परजीवी संक्रमण का खतरा कम होगा। पशुओं को सलाह में कम से कम एक बार नहलाएं।
- ✓ ब्रश करना: पशुओं को नियमित रूप से ब्रश करें। ब्रश करने से उनके शरीर से धूल, गंदगी और मृत त्वचा कोशिकाएं हट जाएंगी। ब्रश करने से रक्त परिसंचरण भी बढ़ता है।
- ✓ परजीवी नियंत्रण: पशुओं को परजीवी संक्रमण से बचाने के लिए परजीवी नियंत्रण उपाय करें। जूँ, किलनी, और मक्खियों के नियंत्रण के लिए पशु चिकित्सक की सलाह पर परजीवीनाशक दवाएं और स्प्रे का उपयोग करें।

- आसपास का वातावरण साफ रखें :

- ✓ घास और झाड़ियों को काटना: पशु आवास के आसपास की घास और झाड़ियों को काट दें। घास और झाड़ियाँ मक्खी और मच्छरों के प्रजनन स्थल हो सकते हैं। घास और झाड़ियों को नियमित रूप से ट्रिम करें।
- ✓ जमा पानी को हटाना: पशु आवास के आसपास जमा पानी को हटा दें। जमा पानी मच्छरों के प्रजनन का स्थान बन सकता है। गड्ढों और खाईयों को भर दें ताकि पानी जमा न हो सके।
- ✓ गोबर प्रबंधन: गोबर को सही तरीके से प्रबंधित करें। गोबर को खाद बनाने के लिए कंपोस्ट करें। गोबर को आवास से दूर खाद गड्ढे में ले जाएं। गोबर को खुले में न छोड़ें क्योंकि यह मक्खी और मच्छरों के प्रजनन का स्थान बन सकता है।

अन्य महत्वपूर्ण बातें

- पशुओं को तनाव से बचाएं :

- ✓ शांत वातावरण: पशुओं को शांत और आरामदायक वातावरण प्रदान करें। जोर से आवाजें, अचानक हलचल, और कुत्तों और अन्य शिकारियों की उपस्थिति से बचें।
- ✓ आश्रय प्रदान करें: पशुओं को बारिश, तेज हवाओं और तेज धूप से बचाने के लिए आश्रय प्रदान करें। पेड़, शेड, या तिरपाल का उपयोग आश्रय के रूप में किया जा सकता है।
- ✓ सामाजिक संपर्क: पशुओं को सामाजिक संपर्क के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान करें। पशुओं को समूहों में रखें ताकि वे एक दूसरे के साथ बातचीत कर सकें। सामाजिक संपर्क तनाव को कम करने में मदद करता है।

- पशुओं को पहचानें :

- ✓ कान टैग: प्रत्येक पशु की पहचान के लिए कान टैग का उपयोग करें। कान टैग पर पशु का पहचान संख्या और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी लिखें।
- ✓ गर्दन पट्टा: गर्दन पट्टे का उपयोग पशुओं को पहचानने के लिए भी किया जा सकता है। गर्दन पट्टे पर पशु का नाम और पहचान संख्या लिखें।
- ✓ टैटू और ब्रांडिंग: टैटू और ब्रांडिंग स्थायी पहचान विधियाँ हैं। टैटू और ब्रांडिंग का उपयोग मूल्यवान पशुओं की पहचान के लिए किया जा सकता है।

- पशु चिकित्सक से संपर्क :

- ✓ नियमित दौरा: अपने पशु चिकित्सक को नियमित रूप से पशु आवास का दौरा करने के लिए बुलाएं। पशु चिकित्सक पशुओं के स्वास्थ्य की जांच कर सकते हैं और रोग निवारण और नियंत्रण के लिए सलाह दे सकते हैं।
- ✓ आपातकालीन संपर्क: पशु चिकित्सक का आपातकालीन संपर्क नंबर हमेशा पास रखें। किसी भी पशु स्वास्थ्य संबंधी आपातकाल के मामले में तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।
- ✓ संबंध स्थापित करें: अपने पशु चिकित्सक के साथ एक मजबूत संबंध स्थापित करें। एक अच्छा पशु चिकित्सक पशु स्वास्थ्य प्रबंधन में एक मूल्यवान भागीदार हो सकता है।

- रिकॉर्ड रखें :

- ✓ पशु स्वास्थ्य रिकॉर्ड: प्रत्येक पशु के लिए पशु स्वास्थ्य रिकॉर्ड रखें। रिकॉर्ड में टीकाकरण, कृमिनाशक, बीमारियों, उपचार, और उत्पादन डेटा शामिल होना चाहिए।
- ✓ रिकॉर्ड का उपयोग: रिकॉर्ड का उपयोग पशु स्वास्थ्य प्रबंधन को बेहतर बनाने के लिए करें। रिकॉर्ड का विश्लेषण करके आप रोग पैटर्न और उत्पादन रुझानों की पहचान कर सकते हैं।

- ✓ डिजिटल रिकॉर्ड: डिजिटल रिकॉर्ड रखने के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेयर या मोबाइल ऐप का उपयोग करें। डिजिटल रिकॉर्ड रखना और प्रबंधित करना आसान होता है।

बरसात में विशेष देखभाल की आवश्यकता वाले पशु:

- छोटे बच्चे (बछड़े, मेमने, आदि) :
- ✓ अतिरिक्त गर्भी: छोटे बच्चों को ठंड से बचाने के लिए अतिरिक्त गर्भी प्रदान करें। उन्हें हीटिंग लैंप या इनफ्रारेड बल्ब के पास रखें। उन्हें कंबल या कोट पहनाएं।
- ✓ रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएं: छोटे बच्चों में रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है। उन्हें कोलोस्ट्रम (खीस) पर्याप्त मात्रा में पिलाएं ताकि रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाई जा सके। उन्हें शुरुआती टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करवाएं। उन्हें साफ और सूखा रखें ताकि संक्रमण का खतरा कम हो सके।
- ✓ पोषण: छोटे बच्चों को माँ का दूध पर्याप्त मात्रा में पिलाएं। यदि माँ का दूध पर्याप्त नहीं है, तो पूरक दूध पिलाएं। उन्हें उच्च गुणवत्ता वाला शिशु आहार दें।
- बूढ़े और कमजोर पशु :
- ✓ आसान पाचन वाला आहार: बूढ़े और कमजोर पशुओं को आसानी से पचने वाला और पौष्टिक चारा खिलाएं। उन्हें नरम और गीला चारा दें। उन्हें दलिया, खिचड़ी, या हरा चारा बारीक काटकर खिलाएं।
- ✓ अतिरिक्त देखभाल: बूढ़े और कमजोर पशुओं को अतिरिक्त देखभाल और आराम की आवश्यकता होती है। उन्हें चलने में मदद करें। उन्हें आरामदायक बिछावन प्रदान करें। उन्हें ठंड और नमी से बचाएं।
- ✓ नियमित स्वास्थ्य जांच: बूढ़े और कमजोर पशुओं की नियमित रूप से स्वास्थ्य जांच कराएं। उन्हें बीमारियों के लिए अधिक संवेदनशील होते हैं। बीमारियों का जल्दी पता लगाने और इलाज करने के लिए नियमित स्वास्थ्य जांच महत्वपूर्ण है।
- गर्भवती पशु - और गहराई से:
- ✓ संतुलित आहार: गर्भवती पशुओं को संतुलित और पौष्टिक आहार खिलाएं। उन्हें पर्याप्त प्रोटीन, ऊर्जा, विटामिन और खनिज प्रदान करें। उन्हें गर्भावस्था के अंतिम तिमाही में अतिरिक्त पोषण दें।
- ✓ तनाव से बचाएं: गर्भवती पशुओं को तनाव से बचाएं। उन्हें शांत और आरामदायक वातावरण प्रदान करें। उन्हें परिवहन और अन्य तनावपूर्ण स्थितियों से बचें।

निष्कर्ष

बरसात का मौसम पशुपालकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण समय होता है, लेकिन उचित देखभाल और प्रबंधन के साथ, आप अपने पशुओं को स्वस्थ और उत्पादक बनाए रख सकते हैं। बरसात में पशुओं की देखभाल और प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य उन्हें बीमारियों, तनाव और खराब मौसम से बचाना है। संक्षेप में, बरसात के मौसम में पशुओं की सफल देखभाल और प्रबंधन के लिए निम्नलिखित "5S" महत्वपूर्ण हैं:

1. स्थान : सूखा और साफ पशु आवास।
2. सूखा चारा : फूँद-मुक्त और सूखा चारा।
3. स्वच्छ पानी : साफ और ताजा पानी।
4. स्वच्छता : पशु आवास और पशुओं की स्वच्छता।
5. सतर्कता : नियमित निगरानी और रोग के संकेतों के प्रति सतर्कता।

इन सिद्धांतों का पालन करके, आप न केवल अपने पशुओं को स्वस्थ रख सकते हैं बल्कि उनकी उत्पादन क्षमता को भी बनाए रख सकते हैं और बरसात के मौसम में पशुपालन को सफल बना सकते हैं।